International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 698-700

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 698-700
www.allresearchjournal.com
Received: 01-10-2015
Accepted: 02-11-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

घनानन्द का भाषा–वैशिष्ट्य

डॉ. शिवदत्त शर्मा

भाषा अपने विचारों को दूसरे तक पहुंचाने का सबसे सटीक एवं शक्तिशाली साधन है। अपने हृदय की बात अनुभूति, एवं प्रभाव की अभिव्यक्ति का शाब्दिक साधन भाषा ही है। न केवल अभिव्यक्ति ही अपितु दूसरों को प्रभावित करने की शक्ति जितनी भाषा में है उतनी किसी और अभिव्यक्ति के साधन में नहीं है, यह भाषा के प्रयोक्ता पर निर्भर करता है कि वह किस प्रकार से श्रोता द्रष्टा अथवा पाठक को किस प्रकार से अर्थात अच्छा या बुरा प्रभावित कर रहा है । अनेक साहित्यिक रचनाएं मात्र भाषा के कारण ही प्रसिद्ध हुईं। दण्डिनः पद लालित्यम् इसी ओर ही इशारा कर रहा हैं। भाषा अच्छी न होने पर कथानक अच्छा होते हुए भी निष्प्रभावी अनेक रचनाएं हिन्दी साहित्य में हैं। आज उसी रचना को अधिक सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है जिसकी भाषा पाठकों को आकर्षित कर सके उनमें रुचि पैदा कर सके। हिन्दी साहित्य में विहारी, सूर, तुलसी आदि अपनी भाषा के कारण ही इतने प्रसिद्ध और लोकप्रिय हैं। ऐसे ही एक अन्य प्रसिद्ध कवि घनानन्द भी अपनी भाषा शैली के लिए हिन्दी साहित्य में प्रतिष्ठित स्थान पर विराज मान हैं। उनका विरह वर्णन, विशेष कर दुख एवं पीड़ा की अभिव्यक्ति का कोई सानी नहीं है, परन्तु इसके पीछे भी भाषा का ही चमत्कार दिखाई देता है। उन्होंने अपनी भाषा के माध्यम से किस प्रकार हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया तथा उनका भाषा –वैशिष्ट्य कैसा था, इसका सर्वपक्षीय मूल्यांकन यहां प्रेत्य है।

घनानन्द ब्रज भाषा के कवि हैं जिनका ब्रज भाषा पर पूर्ण अधिकार था। उन्होंने अपनी सबसे सशक्त भाषा ब्रज को ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। घनानन्द स्वछन्द प्रवृत्ति के कवि थे। उन्होंने अपनी प्रवृत्ति के अनुसार स्वछन्द भाषा का ही प्रयोग किया है। यही कारण है कि सभी विद्वानों ने एक स्वर से घनानन्द की प्रशंसा की है। श्री ब्रजनाथ ने उन्हें ब्रज भाषा प्रवीण की उपाधि से विभूषित किया है। उन्होंने घनानन्द के सम्मान में स्पष्ट कहा है–

> नेही महा ब्रज भाषा–प्रवीन औ सुवदरतानि के भेद को जाने।

अनेक विद्वानों ने दिल खोल कर घनानन्द की प्रशंसा की है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उन की प्रशंसा में लिखा है–भाषा पर जैसा अचूक अधिकार इनका था वैसा और किसी कवि का नहीं।

आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने भी घनानन्द की भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए उनकी भाषा का लोहा माना है। वे लिखते हैं कि– वे प्यार में प्रवीण थे। उन्होंने फारसी में एक मसनवी भी लिखी है, पर वे ब्रज भाषा प्रवीण भी थे।

डॉ मनोहर लाल गौड ने भी इनके बारे में उचित ही लिखा है– आनन्दघन जी की भाषा में नागरिक साहित्यिकता, मुहावरों की व्यावहारिकता सजीवता तथा व्याकरण व्यवस्था का ऐसा अपूर्व सहयोग हुआ है कि इनके सिवाय, उस समय में अन्य कवि की भाषा में वह दृष्टिगोचर नहीं होता है।

डॉ कृष्ण चन्द्र वर्मा ने भी घनानन्द की भाषा के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए लिखा है–उनकी भाषा का स्वरूप साहित्यिक होते हुए भी ठेठ ब्रज के लोकप्रयुक्त स्वरूप का माधुर्य लिए हुए है, साथ ही उनके निजी व्यक्तित्व का सौंदर्य, बांकपन माधुर्य, आदि भी उसमें समा गया है।

इस तरह प्रायः सभी विद्वानों ने घनानन्द की भाषा की प्रशंसा मुक्त कण्ठ से की है। घनानन्द ने साहित्यिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें फारसी के शब्दों का अनूठा मिश्रण है। भाषा के कारण ही घनानन्द रीतिकालीन रीतिमुक्त कवियों में सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। घनानन्द की भाषागत विशेषताओं का विवेचन निम्नलिखित है।

1 भाषा में लाक्षणिकता

घनानन्द के काव्य में लाक्षणिकता साफ दिखाई देती हैं। उन्होंने लाक्षणिकता के साथ साथ शब्दचित्रों

का भी निर्माण किया है। यही कारण है कि उनके काव्य में जहां गत्यात्मकता दिखाई देती है वही संश्लिष्टता भी दिखाई देती है। घनानन्द ने इस तरह भाव, क्रिया, और रूप की सजीव मूर्ति अंकित करने में सक्षम हुए हैं। रामचन्द्रशुक्ल ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए लिखा है–लक्षणा का विस्तृत मैदान खुला रहने पर भी हिन्दी कवियों ने उसके भीतर कम ही पैर बढ़ाया है। घनानन्द ही एक ऐसे कवि हुए हैं जिन्होंने इस क्षेत्र में अच्छी दौड़ लगाई है।

घनानन्द के कुछ लाक्षणिक प्रयोग द्रष्टव्य है। एक स्थान पर कवि ने निर्मोही प्रिय के मधुर रूप में लुटी हुई मति का बड़ा ही सुन्दर लाक्षणिक चित्र पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है–

मति दौरी थकी न लगी ढिक ठौर अमोही के मोह मिठास ठगी।

कवि प्रिय को देखने की तीव्र आकांक्षा लिए हुए है। अपनी इस उत्कट लालसा का लाक्षणिक चित्र प्रस्तुत करते हुए कहता है–

मोहन–सोहन.–जोहन की लगियै रहै आंखिन के उर आरति।

एक और स्थान पर कवि प्रेमी की बावली रीझ की सजीव मूर्ति का अंकन करता हुआ अपनी लाक्षणिक चित्रकला का सुन्दर प्रमाण देता है–

रोकी रहै न, दहै घनानन्द बावरी रीझ के हाथनि हारियै।

एक अन्य पद्य में प्रिय के अंग अंग से किस प्रकार मादक सौंदर्य प्रस्फुटित हो रहा है उसका लाक्षणिक चित्र देखिए–

अंग अंग तरंग उठै दुति की, परिहै मनो रूप अबै धरच्यै।

2 भाव के अनुसार शब्दचयन

घनानन्द ने अपने काव्य में भाव के अनुकूल ही शब्दों का चयन किया है। शब्द चयन करते हुए उन्होंने रस का भी ध्यान रखा है। घनानन्द मूलतः विरह और प्रेम के कवि हैं। बाद में यह लौकिक प्रेम बेशक आध्यात्मिक प्रेम में परिवर्तित हो गया था। वियोग निरूपण में कवि घनानन्द ने सर्वत्र कोमल कान्त पदावली का प्रयोग भाव के अनुसार किया है। वियोग निरूपण में माधुर्य व्यंजक शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस अभिव्यक्ति में उन्होंने सर्वत्र सरल, सुकुमार, और सुंदर पदावली का प्रयोग किया है। घनानन्द के प्रत्येक पक्ष में भावानुकूलता और रसानुकूलता सर्वत्र दिखाई देती है। एक उदाहरण देखिए–

रैन दिना घुटिवौ करै प्रान झारै अंखियां दुखियां झारना सी।
प्रीतम की सुधि अन्तर मैं कसकै सखि ज्यौं पै।सरीन मैं गांसी।
चौं चंदचार च्वइन के चहुं ओर मचे विरचे करि होसी।
यौ मरियै भरियै करि क्यों सु परौ जनि कोउ सनेह की फांसी।

3 चित्रात्मक भाषा का प्रयोग

घनानन्द ने अपनी कविता में लाक्षणिक प्रयोग के अतिरिक्त चित्रोपम भाषा का प्रयोग भी किया गया हे। एक सुलझे हुए चित्रकार की तरह थोड़े से शब्दों से ही घनानन्द ने अपनी कविता में सुन्दर रंग बिखेरे हैं। इसी तरह का एक शब्द चित्र देखिए–

सुख–स्वेद–कनी मुखचन्द बनी विचुरी अलकावलि भांति भली।
मंद जीवन, रूप छकी अंखियां अवलोकनि मारस रंग–रली।
घनानन्द ओपित उंचे उरोजनि चोज मनोज के ओज दली।
गति ढीली लजीली रसीली लसीली सुजान मनोरथ बेल फली।

4 नादात्मकता

घनानन्द के काव्य में यत्रतत्र भाषा में नाद सौंदर्य देखा जा सकता है। कवि नादात्मक शब्दों का बडी सावधानी के साथ प्रयोग करता है। उनके काव्य में भावों की अभिव्यक्ति बड़ी सुगमता से हुई है। घटाओं के गिरने, मोर के कूकने ,समीर के सरसर चलने की ध्वनि और उसका प्रभाव बडी सरलता से सुना जा सकता है। एक उदाहरण देखिए–

घटै घटा चहुंधा घिरि ज्यौं गहि काढे करे जो कलापिनि कुकै।
सिरी समीर सरीर दहै, चहकै चपला चख लैकर उकैं।
एहो सुजान तुम्हें लगे प्रान सु पावस यौं तजि प्यावस सूकैं।
हवै घनानन्द जीवनमूल धरौ चित्त मै कित चातिक चूकैं।

5 द्वयर्थकता

घनानन्द ने कुछ ऐसे पदों की भी रचना की है जिसके अर्थ श्लेषात्मक हैं। निस्सन्देह कवि की अभिव्यक्ति में विलक्षणता स्पष्ट देखी जा सकती हे। इससे भाषा में अभिव्यंजना शक्ति की पर्याप्त बृद्धि हुई हे। उदाहरण स्वरूप घनानन्द शब्द के भी दो अर्थ काव्य में हैं। एक कवि का वाचक है, दूसरा कृष्ण का वाचक है,। एक अन्य अर्थ तीसरा आनन्द के बादल का वाचक है। इसी तरह सुजान शब्द के बारे में कहा जा सकता है। सुजान का एक अर्थ प्रेयसी और दूसरा चतुर कृष्ण के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(क) एक ही जीवहु तौ सु तौ वारयौ सुजान संकोच औ सोच सहारियै।
(ख) कबहुं या विसासी सुजान के आंगन मौ अंसुवानि हूं ले बरसौ।
(ग) मति सुजान अनीत की पाटी इते पै न जानिये कोनें पढाई।

6 अभिव्यक्ति में व्यंजना

घनानन्द की भाषा में वक्रोक्ति मूलक भाषा का प्रयोग मिलता हैं। उनका काव्य वक्रोक्ति से अटापटा है।घनानन्द वक्रोक्ति में सिद्धहस्त हैं। सम्भवतः वक्रोक्ति के कारण ही उनकी कविता इतनी प्रिय लगती हे। कुछ उदाहरण देखिए–

(क) मोहि तुम एक, तुम्हें मो सम अनेक आहिं।
कहा कछु चंदहि चकोरनि की कमी है।
(ख) सुनी है कै नाही कह प्रगट कहावति जू,
काहू कलपाय है सु कैसे कल पाय है।
(ग) मीत सुजान अनीत की पाटी इते पै न जानियै कौने पढाई।
(घ) तुम कौन धौ पाटी पढे हो लला मन लेहू पै देहू छटांक नहीं।

7 सामासिक भाषा का प्रयोग

घनानन्द की भाषा में समासों की बहुलता है। इस तरह कवि में सागर में गागर भरने की क्षमता है। घनानन्द के अतिरिक्त यह विशेषता बिहारी में भी देखने को मिलती हें बिहारी ने जहां दोहा छन्द को अपनाया है, वहां घनानन्द ने कवित्त, सवैया आदि छन्दों का प्रयोग किया है उनके प्रत्येक पद्य में समासों का आधिक्य है। कुछ उदाहरण देखिए–

(क) रूप–गुन–मद–उनमद नेह–तेह–भरे,
छक–बल आतुरी चटक–चातुरी पढे।
मैन–कज–खंजन–कुरंग–मान–भंग करै
सींचे घन आनन्द खुले–संकोच सो मढे।।

8 अर्थ–गाम्भीर्य

घनानन्द के काव्य की केवल यही विशेषता ही नहीं है अपितु उनके काव्य में इसके साथ साथ अर्थ–गाम्भीर्य भी उनकी कविता की विशेषता है। एक जगह वे वर्णन करते हैं कि कवि की उक्ति रूपी दुल्हन मौन का घूंघट डाल कर हृदय रूपी भवन में छिपी रहती है–

उर–मौन के मौन को घूंघट दै दुरि बैठि बिराजति बात–बनी।

उपरोक्त शब्दों में जो अर्थ–गाम्भीर्य भरा है, वह सामान्य शब्दों द्वारा अभिव्यक्त नहीं हो सकता। घनानन्द परम्परागत अभिव्यक्ति से हट कर कई वर्णन करते हैं । उनके अनुसार संसार में प्रायः विरही प्रेमियों की तुलना मछली और पतंगे के साथ की गई है। परन्तु घनानन्द का कहना है कि हमारी दृष्टि में ये दोनों उपमान निकृष्ट हैं। मछली जल से अलग होकर तत्काल मर जाती है और पतंग अपने प्रिय के रूप पर मुग्ध होकर अपने आपको संभाल नहीं पाता और दीपशिखा में जलकर भस्म हो जाता है। परन्तु मेरा मन प्रिय के वियोग में रात दिन तड़पता रहता है और प्रिय मिलन की आसा में असह्य पीड़ा सहन करता रहता है। ऐसी विलक्षण कविता घनानन्द की ही हो सकती है।

मतिबौ बिसराय गनै वह तौ यह बापुरौ मीत–तज्यौ तरसैं ।
बह रूप छटा न सहारि सकै यह तेज तबै चितबै बरसै।
घन आनन्द कौन हु ओखी दसा यति अखरी बाबरी है थरसै।
बिछुरैं–मिलैं मीन–पतंग दसा कहा को जिय की गति कौं परसै।

9 विचित्र प्रयोगों की बहुलता–

घनानन्द ने अपने काव्य में कुछ विचित्र प्रयोग किए हैं। एक स्थान पर वे वर्णन करते हैं कि जिह्वा प्रेम का नाम छू लेती है तो उस पर छाले पड़ जाते हैं। यह प्रयोग सर्वथा विचित्र एवं नवीन है जिसे घनानन्द की कविता में ही देखा जा सकता हे–

रसना के छाले परै प्यारे नेह नांव छूं।

इसी प्रकार कवि अन्यत्र कहता है कि हमारे भाग्य में तो तुम्हें रात दिन याद करना लिखा है और तुम्हारे भाग्य में हर रोज हमें भूल जाना लिखा है। अतः हम किसे उलाहना दें। यह तो अपने अपने भाग्य की बात है–

इस बांट परी सुधि, रावरे भूलनि , कैसे उलाहनों दीजिए जू।

10 मुहावरे और लोकोक्तियां

भाषा में मुहावरे और लोकोक्तियां चमत्कार पैदा कर देतीं हैं। उनकी उक्तियां अत्यधिक मधुर, रसीली, और अनूठी बन पड़ी है। कुछ उदाहरण देखिए–

(क) चातक रे घातक हवै तू हू कान फोरि लै।
.....कान फोडना
(ख) आंखिन बसेहो सब सूने जग जोहिए.....
आंखों में बसना
(ग) तुम कौन धौ पाटी पढे हौ लला।.....पट्टी पढना

11 जनपदीय भाषा का प्रयोग

घनानन्द के काव्य में साहित्यिक भाषा के साथसाथ स्थानीय बोल चाल के शब्दों का भ्झी खुलकर प्रयोग करते हैं जिसे उनकी भाषा के सौन्दर्य में बृद्धि हुई है। घनानन्द ब्रज प्रदेश में काफी समय तक रहे और उन्होंने न केवल ब्रजभाषा का गहन अध्ययन किया, बल्कि जनपदीय भाषा को भी गहराई से समझा। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं–

(क) पैड परे पापी ये कलापी निस द्यौस ज्यों ही।
(ख) वेदन की बढ वारि कहौं लौं दुराइयै ।
(ग) सो घन आनन्द जान अजान लौं टूक कियौ परि बांचि न देख्यौ।

इस तरह कहा जा सकता है कि घनानन्द के काव्य में अद्वितीय अभिव्यक्ति है। उनका भाषा–वैशिष्ट्य अतुलनीय है। उनकी भाषा में उपरि व्यक्त गुण अन्यत्र बहुत कम कवियों में विद्यमान हैं। यही कारण है कि उनकी कविता न केवल अद्भुत है अपितु सर्वाधिक लोक प्रिय भी हैं।

संदर्भ सूचि

1. श्री विश्वानाथ प्रसाद मिश्र घनानन्द ग्रन्थावली भूमिका पृ 48
2. उपरोक्त उपरोक्त पृ 196
3. डॉ मनोहर लाल गौड घनानन्द और स्वछन्द काव्य धारा पृ 243
4. उपरोक्त उपरोक्त पृ 244
5. उपरोक्त उपरोक्त पृ 254
6. उपरोक्त उपरोक्त पृ 07
7. उपरोक्त उपरोक्त पृ 270
8. उपरोक्त उपरोक्त पृ 241
9. उपरोक्त उपरोक्त पृ 281
10. उपरोक्त उपरोक्त पृ 250
11. श्री रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ 386
12. डॉ मनोहर लाल गौड घनानन्द और स्वच्छन्द काव्यधारा पृ 17
13. उपरोक्त पृ 184